❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि। ऋ. 2/23/2
हे प्रभो ! सम्पूर्ण विद्याओं के आदि मूल आप ही हैं।
O Lord ! you are the fountain head of all knowledge.

वर्ष 38, अंक 31 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 जून, 2015 से रविवार 21 जून, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
21 जून पर विशेष

योग का महत्त्व

यह सत्य है कि सांसारिक वस्तुओं के साथ हमारा सम्बन्ध नित्य रहने वाला नहीं है। इन विषय भोगों को अधिकाधिक भोग कर कोई व्यक्ति पूर्ण व स्थायी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। यह अटल सत्य है कि ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सदा से था, आज भी है और आगे भी रहेगा। इस सम्बन्ध का कभी विच्छेद नहीं होता ऐसे ईश्वर को ही प्राप्त करके मनुष्य पूर्ण रूपेण सुखी हो सकता है अन्यथा नहीं।

आज की विकट सामाजिक परिस्थिति में वैदिक धर्म संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज, परम्पराएँ आदि लुप्त प्रायः हो गयी हैं। इसके विपरीत केवल भोगवादी और अर्थवादी परम्पराओं का अत्याधिक प्रचार-प्रसार हो रहा है। इन कारणों से ब्रह्म विद्या दुर्लभ हो गयी है। स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये आज के मनुष्य ने घोर पुरुषार्थ किया और करता भी जा रहा है। सारी पृथ्वी का स्वरूप ही बदल डाला फिर भी वह समस्त दुःखों की निवृत्ति और नित्य आनन्द की प्राप्ति नहीं कर पाया और यदि इसी प्रकार चलता रहा तो भविष्य में भी मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति की कोई संभावना नही है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार, ईर्ष्या, द्वेषादि मानसिक रोगों का समाधान केवल धनसम्पति व भौतिक विज्ञान से कदापि संभव नहीं हो सकता। इन मानसिक रोगों का समाधान तो आत्मा-परमात्मा सम्बंधी अध्यात्म विद्या को पढ़ने से और यौगिक पद्धति अपनाने से ही सम्भव है अन्यथा नहीं।

आज के हजारों भौतिक वैज्ञानिक तन, मन व धन से भौतिक आविष्कारों में लगे हुए हैं और वे इसी से समस्त दुखों की निवृत्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति को सिद्ध करना चाहते हैं परन्तु वे एक बात भूल रहे हैं कि मानव बिना विज्ञान के सुखी था। असली आनन्द का झरना तो परमात्मा से आत्मा की ओर गिरता है। योग के महत्त्व को हम इस प्रकार से समझ सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त करना चाहता है। जब तक व्यक्ति योगदर्शन में प्रतिपादित दुःख-दुःख के कारण, सुख और सुख के कारण के स्वरूप को अच्छी प्रकार से नहीं जानता तब तक समस्त दुःखों की निवृत्ति और नित्य सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

> ***..... काम क्रोध लोभ मोह अंहकार ईर्ष्या द्वेषादि मानसिक रोगों का समाधान केवल धनसम्पति व भौतिक विज्ञान से कदापि संभव नहीं हो सकता। इन मानसिक रोगों का समाधान तो आत्मा-परमात्मा सम्बंधी अध्यात्म विद्या को पढ़ने से और यौगिक पद्धति अपनाने से ही सम्भव है ....***

योगासन के गुण और लाभ

1 योगासन का सबसे बड़ा गुण यह है कि ये सहज, साध्य और सर्वसुलभ हैं योगासन ऐसी व्यायाम पद्धति है जिसमें न तो कुछ विशेष व्यय होता और न खर्चीली साधन सामग्री की जरूरत होती।

Yoga for Harmony & Peace

2 यागासन अमार-गराब, बूढ़-जवान सबल-निर्बल सब कर सकते हैं।

3 आसनों में जहां मांसपेषियों को तानने, सिकोड़नें और ऐंठन वाली क्रियायें करनी पड़ती है, वहीं दूसरी ओर साथ-साथ तनाव-खिंचाव दूर करने वाली क्रियायें भी होती हैं जिससे शरीर की थकान मिट जाती है। साथ में शरीर और मन को तरोताजा करने वाली शक्ति भी मिलती है।

4 योगसनों से भीतरी ग्रंथियां अपना काम अच्छी तरह करती है और युवावस्था बनाये रखने एवं वीर्य रक्षा में सहायक होती हैं।

5 योगासनों द्वारा पेट की भली-भांति सुचारू रूप से सफाई होती है और पाचन अंग पुष्ट होते हैं पाचन संस्थान में गड़बड़ियां उत्पन्न नहीं होती।

6 योगासन मेरूदण्ड-रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाते है और व्यय हुई नाड़ी शक्ति की पूर्ति करते हैं।

- शेष पृष्ठ 8 पर

क्या योग आतंकवाद से भी बुरा है?

क्या योग वास्तव इतना बुरा है कि कुछ मुस्लिम धर्मगुरु इसका एक स्वर में विरोध कर रहे हैं। कुछ इसमें से कुछ हटवाने पर आमादा हैं तो कुछ कुछ और। क्या योग मानवता के दुश्मन आतंकवाद से भी बुरा है जिसके खिलाफ ऊंचे स्वर में इन धर्मगुरुओं का विरोध आज तक न कहीं सुनाई दिया और न ही कहीं दिखाई दिया, जिससे सैंकड़ो मनुष्य प्रतिदिन मारे जाते हैं????....

....अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों में से सूर्य नमस्कार को हटाने के लिए जितनी शक्ति इन तथाकथित मौलानाओं, मौलवियों, और विभिन्न मुस्लिम धर्मगुरुओं ने लगाई है, उतनी शक्ति यदि उन्होंने विश्व में चल रही आतंकवाद की घटनाओं को रोकने एवं उसके विरोध में लगाई होती तो विश्व एवं समाज का कल्याण हो सकता था। यह आतंकवाद मानवजाति के लिए खतरा है इससे प्रतिदिन सैंकड़ों लोग अपना जीवन गंवा रहे हैं, जबकि योग तो जीवन संजीवनी है।.....

पढ़िए! इस विषय पर विशेष सम्पादकीय पृष्ठ 2 पर

उत्साह के साथ मनाएं अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
योग कक्षाएं, योग चर्चा, आसन व्यायाम का करें सामूहिक आयोजन

विश्व की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के प्रथम आयोजन 21 जून 2015 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सतसंग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से- 1. योग कक्षाएं 2. योग के संबंध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं।

निवेदकः आचार्य बलदेव (प्रधान) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रकाश आर्य (मंत्री) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली में योग दिवस पर विशेष आयोजन

रविवार	समय	स्थान	सान्निध्य
21 जून, 2015	प्रातः 6 से 7:30 बजे	एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग (प.), नई दिल्ली	साध्वी उत्तमायति

निवेदक

महाशय धर्मपाल, प्रधान; राजीव आर्य, महामंत्री — आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)

धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामंत्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सत्यानंद आर्य, प्रधान; अरविंद नागपाल, प्रबंधक — एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल

वेद-स्वाध्याय

विशाल बाहु परमेश्वर को अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं

बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्त्रमूतये। साधु कृण्वन्तमवसे।। ऋ० 8/32/10

ऋषिः - **काण्वो मेधातिथिः**।। देवता- **इन्द्रः**।। छन्दः- **गायत्री**।।

शब्दार्थ-बृबदुक्थम्- स्तुति करने योग्य इन्द्र को **ऊतये**- रक्षा के लिए **हवामहे**- हम पुकारते हैं जो इन्द्र **सृप्रकरस्त्रम्**- सब जगह फैली हुई भुजाओं वाला है **अवसे** - जो पालन पोषण के लिए **साधु कृण्वन्तम्**- कल्याण ही करने वाला है।

विनय- हे परमेश्वर! हम तुम्हे रक्षा के लिए पुकारते हैं। इस संसार में बहुत-से क्लेश, दुःख और आपत्तियां हम पर आती हैं, बहुत -से भय उपस्थित होते रहते हैं। उस समय में हे परमेश्वर! हम तुम्हें ही याद करते हैं। तुम्हारे सिवा क्लेश में हम और किसे पुकारें। क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हीं एकमात्र रक्षक हो। जब तुम रक्षा करना चाहते हो तो सैंकड़ों विपत्तियों के बादलों को क्षणभर में उड़ा देते हो, सैकड़ों बंधनों को एकक्षण में काट देते हो। जहां रक्षा का कोई भी उपाय दिखाई नहीं देता, अन्तिम नाश ही दीख रहा होता है, बच जाने की जहां हम कोई कल्पना तक नहीं कर सकते, वहां पर भी तुम्हारे अदृश्य हाथ पहुंचे हुए हमारी रक्षा कर देते हैं। तुम्हारे रक्षा करने वाले हाथ प्रत्येक स्थान पर और प्रतिक्षण पहुंचे हुए हैं। इसलिए हे सृप्रकरस्त्र! हम कभी भी आशा नहीं छोड़ते कि तुम हमें बचा न लोगे, अतः हम तुम्हें पुकारते जाते हैं। तुम यदि रक्षा नहीं भी करते तो भी हम अशांत नहीं होते, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हारी अरक्षा में भी रक्षा छिपी होती है। हे देव! हमें अटल विश्वास है कि तुम कल्याण ही करने वाले हो। तुमसे अकल्याण कभी हो ही नहीं सकता। हम नहीं समझ पाते हैं कि स्पष्ट दीखने वाली अमुक आपत्ति किस प्रकार कल्याण के रूप में बदल जाएगी, हमारा विनाश कैसे भलाई का लाने वाला होगा, परंतु अनुभवों द्वारा अन्तस्तल पर यह विश्वास निहित है कि तुम अपनी प्रत्येक घटना द्वारा हम लोगों का भला ही कर रहे हो और अन्ततः तुम हमारी पालना करोगे, हमें बचा लोगे। हमारा अत्यन्त विनाश तुम कभी नहीं होने दे सकते, अतः हम तुम्हें ही रक्षा के लिए पुकारते हैं। सदा ऐसे विलक्षण ढंग से सबका कल्याण करते हुए तुम हमारी निश्चित रक्षा करने वाले हो। हमारे कल्याण के लिए अपने रक्षक बाहुओं को प्रत्येक क्षण में और प्रत्येक स्थान में फैलाए बैठे हो। तुम्हारे सिवाय मनुष्य के लिए और कौन सतुत्य है? मनुष्य और किसके गीत गाये? तुम्हारी ही स्तुति कर वह अपनी वाणी को कृतकृत्य कर सकता है।

- **आचार्य अभयदेव**

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु सम्पर्क करें -

विजय आर्य, मो0 - 9540040339

विशेष सम्पादकीय

क्या योग आतंकवाद से भी बुरा है?

21 जून को योग दिवस के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिलना भारत के लिये ही नहीं अपितु पूरी मानव जाति के लिये गौरव की बात है, क्योंकि योग स्वास्थ्य की ऐसी एक पूँजी है जिसे हम थोड़ी सी मेहनत में किसी से बिना माँगे प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु जब हम इस पर धार्मिक बहस होती देखते हैं या तथाकथित धर्मगुरुओं, मौलानाओं के बयान सुनते हैं, तो मन में कई सारे प्रश्न उठना आवश्यक हो जाते हैं, जैसेकि- आतंकवाद के खिलाफ कभी ये मौलाना पैदल मार्च कर विरोध नहीं जताते! लेकिन योग के खिलाफ ये लोग सड़क से संसद तक खड़े हो गये? क्या योग आतंकवाद से भी बुरा कृत्य है? जबकि मुस्लिम यह कहते हैं कि सारी कायनात खुदा ने रची, तो सूर्य देव से नफ़रत क्यों? सूर्य भी इसी प्रकृति का हिस्सा है फिर सूर्य नमस्कार या सूर्य देव के सजदे का विरोध क्यों? तीसरा सबसे बड़ा प्रश्न जो ओ३म् शब्द के उच्चारण को लेकर है। वे ये है कि मुस्लिम धर्मगुरु चाहते हैं कि ओ३म् की जगह अल्लाह शब्द का उच्चारण हो या फिर खामोश रहा जाये, मतलब कि निःशब्द योग। मगर यदि हम ओ३म् को उर्दू या अरबी वर्णमाला में जाचें तो उसमें ओ३म् बनता है, अलिफ, वाव और मीम से हम कह सकते हैं कि ओ३म् के अलिफ से अल्लाह। वाव व मीम से मोहम्मद यानी इसका मतलब यह हुआ कि इस्लाम में ओ३म् है। तभी कुछ इस्लामिक विद्वान कह रहे हैं कि कुछ संकीर्ण सोच के धर्मगुरुओं ने योग के विरुद्ध बयान देकर न केवल अपना मजाक उड़वाया बल्कि अपने इस काम से इस्लाम को क्षति भी पहुँचाई।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों में से सूर्य नमस्कार को हटाने के लिए जितनी शक्ति इन तथाकथित मौलानाओं, मौलवियों, और विभिन्न मुस्लिम धर्मगुरुओं ने लगाई है, उतनी शक्ति यदि उन्होंने विश्व में चल रही आतंकवाद की घटनाओं को रोकने एवं उसके विरोध में लगाई होती तो विश्व एवं समाज का कल्याण हो सकता था। यह आतंकवाद मानवजाति के लिए खतरा है इससे प्रतिदिन सैंकड़ों लोग अपना जीवन गंवा रहे हैं, जबकि योग तो जीवन संजीवनी है।

अब यदि हम इससे आगे बढ़कर कुछ इस्लामिक बेबसाईट देखें तो योग व्यायाम न होकर हिन्दू धर्म में एक इबादत (प्रार्थना) की विधि बतायी जा रही है, तो कुछ इस्लामिक विद्वान कह रहे हैं कि योगासन सूर्य की ओर देखे बिना या सूर्य नमस्कार के बिना भी किया जा सकता है। इससे इस्लाम धर्म को नुकसान नहीं होगा। इस संदर्भ में जहाँ कुछ मौलानाओं की मानसिक कंगाली देखने को मिल रही है, वहीं इंडोनेशिया के एक मुस्लिम विद्वान आलिम मौलवी मसऊदी ने कहा, 'योग एक बढ़िया वर्जिश है। इसे धर्म से न जोड़ा जाये क्योंकि इस्लाम पर पहले से ही कट्टरता के अनेकों दाग हैं, योग को धर्मों की बलि पर नहीं चढ़ाया जाना चाहिये। जिस प्रकार नमाज से पहले नीयत उसी तरह योग से पहले संकल्प लिया जाता है।' और ये सत्य भी है। हर एक धर्म जीव और परमात्मा के बीच सीधे संपर्क की बात करता है ताकि वे पृथ्वी पर मौजूद चीजों के समूह और स्वामित्व के चक्कर में भटकते न रह जाये। परमात्मा से मिलने की योग जैसी कोई दूसरी प्रक्रिया हो ही नहीं सकती।

सभी मतों की विचारधारा ने इस बात पर जोर दिया कि सांसरिक और शारीरिक लालसाओं को वश में कर खुद को परमात्मा के मिलन के मार्ग पर झोंक दो वे ही आनंद है, वे ही मुक्ति का मार्ग है और अंततः ये कि जब योग से बौद्ध, सिख, इसाई, यहूदी, पारसियों को कोई एतराज नहीं है, तो ये मौलवी क्यों बेवजह अपनी संकीर्ण और मूर्खतापूर्ण मानसिकता का परिचय दे रहे हैं। सबको पता है, स्वस्थ शरीर ही मानव जीवन का सबसे बड़ा सुख है। पहले इस्तेमाल करो, फिर विश्वास करो।

-सम्पादक

बोध कथा

निष्काम सेवा

मुलतान में प्लेग फैल गई। प्रत्येक स्थान पर आर्य समाज के निःस्वार्थ सेवक पहुंच गये। मुलतान में प्लेग का वेग बढ़ा तो नगर के कई भाग वीरान हो गये। महान् आत्मा पण्डित रलाराम जी के साथ मैं वहां कार्य कर रहा था। नगर में चहुं ओर सूनापन था। पति पत्नी को छोड़कर चला गया, पत्नी पति को, भाई ने भाई को छोड़ दिया और पुत्र ने पिता को। एक मोहल्ले से कुछ सेवक सूचना लाये कि एक लाला जी यहां रुग्ण हैं। प्लेग हो गई है। घर के सब लोग भाग गये हैं। उन्हीं दिनों पादरी स्टोक्स भी वहां कार्य कर रहे थे। पण्डित रलाराम जी ने लाला का हाल सुना तो बोले, 'चलो वहां चलें।'

उनके साथ मैं वहां पहुंचा तो देखा कि बेचारे लालाजी की दशा बहुत चिन्ताजनक है। पण्डित रलारामजी को प्लेग के रोगी देखते-देखते पर्याप्त अनुभव हो गया था। लालाजी की गिल्टी बहुत पक गई थी। वह चमक रही थी। उसे देखकर बोले ''ऑपरेशन के बिना यह व्यक्ति बचेगा नहीं। दौड़कर जाओ, किसी डॉक्टर को बुला लाओ।''

मैंने कहा, ''इस समय डॉक्टर कहां से मिलेगा?''

वे बोले, ''डॉक्टर नहीं तो कोई जर्राह, कोई नाई बुलाओ।'' मैंने कहा, ''पण्डित जी, इस समय कोई नाई नहीं मिलेगा। सब लोग तो भाग गये हैं, यहां आयेगा कौन?'' वे बोले, ''अच्छा भाई, घर में ही देखो, कदाचित् कोई चाकू या छुरी ही मिल जाये।''

मैंने खोजा, वहां चाकू या छुरी भी नहीं मिली। पण्डितजी ने कहा, ''अच्छा स्पिरिट तो तुम्हारे पास है। उससे इस गिल्टी को स्वच्छ कर दो।''

मैंने रुई को स्पिरिट में भिगोया, गिल्टी को साफ कर दिया। पण्डित रलारामजी की दाढ़ी पर्याप्त लम्बी थी। उसे हाथ से पीछे हटाकर वे नीचे झुके और दांतों से उस गिल्टी को काट दिया।

यह है निष्काम सेवा की भावना! ऐसी भावना जिस व्यक्ति के मन में होगी, वहां चित्त का मैल रहेगा कहाँ? निष्काम सेवा से मन में जो प्रसन्नता होती है, उसे वही लोग समझते हैं, जो ऐसी सेवा करते हैं।

तरुवर न चाखे फल आपनो, नदी न पीवे नीर।
परमारथ के कारने, संतन धरा शरीर।।

-साभार, बोध कथाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - हैल्प लाइन

समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें-

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग -	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा -	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता -	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु-	श्री अर्जुन देव चड्ढा (9414187428)
वैवाहिक परिचय आवेदन/जानकारी हेतु -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश-वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य -	श्री अशोक कुमार (9540040322)
घर-घर यज्ञ योजना	श्री सत्यप्रकाश आर्य (9650183335)

मनुष्य समाज के लिए हानिकारक फलित ज्योतिष और महर्षि दयानन्द

जिन दिनों महर्षि दयानन्द जी ने फलित ज्योतिष का युक्ति व प्रमाणों से खण्डन किया था उन दिनों हमारा समाज व देश आज की तुलना में कहीं अधिक अज्ञान, अन्धविश्वासों व कुरीतियों से ग्रसित था। उनके प्रचार का परिणाम ही आज इन असत्य व अनुचित अन्धविश्वासों में कमी का होना है। हमारा समाज कितना अज्ञानी व अन्धविश्वासी है इसका ज्ञान आज भी मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद व जन्मना जातिप्रथा आदि का जारी रहना है। अतः आज पुनः पुरजोर इन मिथ्या विश्वासों के खण्डन की आवश्यकता है जिससे समाज इन बुराईयों से मुक्त हो सके। स्वामी दयानन्द जी का आरम्भ किया यह कार्य अधूरा है। आशा है कि उनके अनुयायी आर्यसमाजी बन्धु व समाज के विवेकी लोग समाज को अन्धविश्वासों व कुरीतियों से मुक्त कराने का प्रयास करेंगे। -संपादक

- मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि का आधार कर्म है। ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति तीन अनादि, नित्य और अविनाशी सत्तायें हैं। सृष्टि प्रवाह से अनादि है परन्तु ईश्वर के नियमों के अनुसार इसकी उत्पत्ति- स्थिति-प्रलय- उत्पत्ति का चक्र चलता रहता है। जीवात्माओं को कर्मानुसार ईश्वर से जन्म मिलता है जिसमें वह पूर्व जन्मों के कर्मो का फल भोगते हैं व मनुष्य जन्म में पुराने कर्मो के भोग के साथ नये कर्म भी करते हैं। जीवन का उद्देश्य धर्म, कर्म, काम व मोक्ष की प्राप्ति है। जो निष्काम कर्म किये जाते हैं वह मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं और सकाम कर्म भोग अर्थात् जन्म-जन्मान्तर में सुख व दुःख की प्राप्ति कराते हैं। महाभारत काल व उसके बाद के कुछ सहस्र वर्षो तक यही मान्यता, सिद्धान्त व विश्वास समाज व देश-विदेश में प्रचलित रहे। महाभारत काल के बाद धीरे-धीरे सारे देश में अज्ञानान्धकार बढ़ता गया। उस काल में सुख व दुखों का आधार कर्मो पर आधारित न मानकर उसे ग्रहों व उपग्रहों आदि आकाशीय पिण्डों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र आदि ग्रहों की स्थिति व उनके फलों को माना जाने लगा। इसके पीछे इसको प्रचलित करने वालों का अज्ञान व स्वार्थ ही मुख्य कारण दिखाई पड़ते हैं। अज्ञानता व अन्धविश्वासों के कारण फलित ज्योतिष ने समाज व देश में अपना स्थान बना लिया जिसके अनेक दुष्परिणामों में परतन्त्रता, दासता, निर्धनता, सार्वत्रिक पतन सहित विदेशियों व विधर्मियों की गुलामी भी सम्मिलित है।

ईश्वर की कृपा से देश के अच्छे दिन आये और ईश्वरीय ज्ञान वेदों से सम्पन्न अपूर्व महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का सन् 1863 में सामाजिक जगत में आविर्भाव हुआ। उन्होंने देश व समाज को कमजोर व हानि पहुंचाने वाले एक-एक कारण का पता किया और उस पर अपने वैदिक ज्ञान के आधार पर प्रकाश डाला जिससे पतन समाप्त होकर सर्वत्र उन्नति हो सके। महर्षि दयानन्द ने फलित ज्योतिष से जुड़े ग्रहों आदि के मनुष्य जीवन पर वर्तमान तथा भविष्य काल में पड़ने वाले सुख व दुःखों रूपी प्रभावों पर भी प्रकाश डाला। उनके विचारों को पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। ग्रहों का फल होता है या नहीं? इस प्रश्न को उपस्थित कर महर्षि दयानन्द इसका उत्तर देते हुए कहते हैं कि जैसा पोपलीला का है वैसा नहीं किन्तु जैसा सूर्य व चन्द्रमा की किरण द्वारा उष्णता व शीतलता अथवा ऋतुवत्कालचक्र के सम्बन्धमात्र से अपनी प्रकृति के अनुकूल प्रतिकूल सुख-दुःख के निमित्त होते हैं। परन्तु जो पोपलीला वाले कहते हैं कि 'सुनो महाराज ! सेठ जी ! तुम्हारे आज आठवां चन्द्र सूर्य्यादि क्रूर घर में आये हैं। अढ़ाई वर्ष का शनेश्चर पग में आया है। तुम को बड़ा विघ्न होगा। घर द्वार छुड़ाकर परदेश में घुमावेगा परन्तु जो तुम ग्रहों का दान, जप, पाठ, पूजा कराओगे तो दुःख से बचोगे।' इनसे कहना चाहिये कि सुनो पोपजी! तुम्हारा और ग्रहों का क्या सम्बन्ध है? ग्रह क्या वस्तु हैं? (ज्योतिषी पोपजी का उत्तर) **दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः। ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद् ब्राह्मणदैवतम्।।** देखों ! कैसा प्रमाण है-देवताओं के आधीन सब जगत्, मन्त्रों के आधीन सब देवता और वे मन्त्र व देवता ब्राह्मणों के आधीन है। इसलिये ब्राह्मण देवता कहलाते हैं। क्योंकि चाहे जिस देवता को मन्त्र के बल से बुला लो, उसको प्रसन्न कर, काम सिद्ध कराने का हमारा ही अधिकार है। जो हम में मन्त्रशक्ति न होती तो तुम्हारे से नास्तिक हम को संसार में रहने ही न देते। (सत्यवादी का पोप जी से उत्तर व प्रश्न) जो चोर, डाकू, कुकर्मी लोग हैं वे भी तुम्हारे देवताओं के आधीन तो होंगे? देवता ही उनसे दुष्ट काम कराते होंगे? यदि ऐसा है तो तुम्हारे देवता और राक्षसों में कुछ भेद न रहेगा। जो तुम्हारे आधीन मन्त्र हैं उन से तुम चाहो सो करा सकते हो तो उन मन्त्रों से देवताओं को वश में करके, राजाओं के कोष उठवा कर अपने घर में भरकर बैठ के आनन्द क्यों नहीं भोगते? घर-घर में शनैश्चरादि के तेल आदि का छायादान लेने को मारे-मारे क्यों फिरते हो? और जिस-जिस को तुम कुबेर मानते हो उसको वश में करके चाहे जितना धन लिया करो। बेचारे गरीबों को क्यों लूटते हो? तुम को दान देने से ग्रह प्रसन्न और न देने से अप्रसन्न होते हों, तो हम को सूर्य्यादि ग्रहों की प्रसन्नता अप्रसन्नता प्रत्यक्ष दिखलाओ। जिसको 8वां सूर्य, चन्द्र और दूसरे को तीसरा हो उन दोनों का ज्येष्ठ महीने में बिना जूते पहने तपी हुई भूमि पर चलाओ। जिस पर सूर्य देवता प्रसन्न हैं उन के पग, शरीर न जलने चाहिये और जिस पर सूर्य देवता क्रोधित हैं उनके जल जाने चाहिये तथा पौष मास में दोनों को नंगा कर पूर्णमासी की रात्रि भर मैदान में रखें। एक को शीत लगे दूसरे को नहीं तो जानों कि ग्रह क्रूर और सौम्यदृष्टि वाले होते हैं। और क्या तुम्हारे ग्रह सम्बन्धी (रिश्तेदार) हैं? और क्या तुम्हारी डाक वा तार उन के पास आता जाता है?

अथवा तुम उन के वा वे तुम्हारे पास आते जाते हैं? जो तुम में मन्त्र-शक्ति हो तो तुम स्वयं राजा वा धनाढय क्यों नहीं बन जाओ? वा शत्रुओं को अपने वश में क्यों नहीं कर लेते हो? नास्तिक वह होता है जो वेदों के अनुसार ईश्वर की आज्ञा के विरूद्ध पोपलीला चलावे। जब तुम को ग्रहदान न देवे जिस पर ग्रह है, वही ग्रहदान को भोगे तो क्या चिन्ता है? जो तुम कहो कि नहीं हम ही को देने से वे प्रसन्न होते हैं अन्य को देने से नहीं तो क्या तुम ने ग्रहों का ठेका ले लिया है? जो ठेका लिया हो तो सूर्यादि को अपने घर में बुला के जल मरो। सच तो यह है कि सूर्यादि लोक जड़ हैं। वे न किसी को दुःख और न किसी को सुख देने की चेष्टा कर सकते हैं किन्तु जितने तुम ग्रहदानोपजीवी हो वे तुम सब ग्रहों की मूर्तियां हो क्योंकि ग्रह शब्द का अर्थ भी तुम में ही घटित होता है।

'ये गृहणन्ति ते ग्रहाः' जो ग्रहण करते हैं उन का नाम ग्रह है। जब तक तुम्हारे चरण राजा रईस सेठ साहूकार और दरिद्रों के पास नहीं पहुंचते तब तक किसी को नवग्रह का स्मरण भी नहीं होता। जब तुम साक्षात् सूर्य शनैश्चरादि मूर्त्तिमान क्रूर रूप धर उन पर जा चढ़ते हो तब विना ग्रहण किये उन को कभी नहीं छोड़ते और जो कोई तुम्हारे ग्रास में न आवे उनकी निन्दा नास्तिकादि शब्दों से करते। एक अन्य प्रश्न पोपजी की ओर से महर्षि दयानन्द करते हैं कि देखो! ज्योतिष का प्रत्यक्ष फल। आकाश में रहने वाले सूर्य, चन्द्र और राहु, केतु का संयोग रूप ग्रहण को पहले ही कह देते हैं। जैसा यह प्रत्यक्ष होता है वैसा ग्रहों का भी फल प्रत्यक्ष हो जाता है। देखो ! धनाढय, दरिद्र, राजा, रंक, सुखी, दुःखी सब ग्रहों के प्रभाव से ही होते हैं। ज्योतिषियों की इस मान्यता का महर्षि दयान्द जी का उत्तर है कि (सत्यवादी) जो यह ग्रहणरूप प्रत्यक्ष फल है सो गणितविद्या का है, फलित का नहीं। जो गणितविद्या है वह सच्ची और फलित विद्या स्वाभाविक सम्बन्ध जन्य को छोड़ के झूठी है। जैसे अनुलोम प्रतिलोम घूमने वाले पृथिवी और चन्द्र के गणित के नियम से स्पष्ट विदित होता है कि अमुक समय, अमुक देश, अमुक अवयव में सूर्य व चन्द्रग्रहण होगा। जैसे- छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभाः। (सिद्धान्तशिरोमणि ग्रन्थ का वचन) और इसी प्रकार सूर्यसिद्धान्तादि में भी है अर्थात् जब सूर्य और भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता तब सूर्यग्रहण और जब सूर्य और चन्द्र के बीच में भूमि आती है तब चन्द्रग्रहण होता है। अर्थात् चन्द्रमा की छाया पृथ्वी पर और पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। सूर्य प्रकाशरूप होने से सम्मुख छाया किसी की नहीं पड़ती किन्तु जैसे प्रकाशमान सूर्य व दीप से देहादि की छाया उल्टी जाती है वैसे ही ग्रहण में समझो। जो घनाढय, दरिद्र, प्रजा, राजा व रंक होते हैं वे अपने कर्मो से होते हैं ग्रह आदि से नहीं। बहुत से ज्योतिषी लोग अपने लड़के व लड़की का विवाह ग्रहों की गणित विद्या के अनुसार करते हैं, पुनः उन में विरोध व विधवा अथवा मृतस्त्रीक पुरुष हो जाता है। जो फल सच्चा होता तो ऐसा क्यों होता? इसलिये कर्म की गति सच्ची और ग्रहों की गति सुख दुःख भोग में कारण नहीं। भला ग्रह आकाश में और पृथिवी भी आकाश में बहुत दूर पर है। इनका सम्बन्धकर्त्ता और कर्मो के साथ साक्षात् नहीं। कर्मो का कर्त्ता व उन कर्मो के फलों का भोक्ता जीव और कर्मो के फलों को भोगानेहारा परमात्मा है। जो तुम ग्रहों का फल मानो तो इसका उत्तर दो कि जिस क्षण में एक मनुष्य का जन्म होता है जिस को तुम ध्रुवा त्रुटि मानकर जन्मपत्र बनाते हो, उसी समय में भूगोल पर दूसरे का जन्म होता है या नहीं? जो कहो नहीं तो झूठ, और जो कहो होता है तो एक चक्रवर्ती राजा के सदृश भूगोल में दूसरा चक्रवर्ती राजा क्यों नहीं होता? हां! इतना तुम कह सकते हो कि यह लीला हमारे उदर भरने की है तो कोई भी मान लेगा। अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि जब किसी रोगी सन्तान के माता-पिता किसी ज्योतिषी के पास जा कर कहते हैं-'हे महाराज ! इस को क्या हुआ है? तब वे कहते हैं कि -'इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढ़े हैं। जो तुम इन ग्रहों की शान्ति, पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाए, नहीं तो बहुत पीड़ित होकर मर जाए तो भी आश्चर्य नहीं।'

ज्योतिषी के इस कथन का उत्तर महर्षि दयानन्द जी ने यह कहकर दिया है कि कहिये ज्योतिर्वित्! जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं, वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये मनुष्यों की तरह से चेतन हैं जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें? (प्रश्न) क्या जो यह संसार में राजा प्रजा सुखी दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नहीं है? (उत्तर) नहीं, ये सब पाप पुण्यों के फल हैं। (प्रश्न) तो क्या ज्योतिषशास्त्र झूठा है? (उत्तर) नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेख गणित विद्या है वह सब सच्ची है, जो फल की लीला है वह सब झूठी है। (प्रश्न) क्या जो यह जन्मपत्र है सो निष्फल है? (उत्तर) हां, वह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोकपत्र' रखना चाहिये क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सब को आनन्द होता है। परन्तु वह आनन्द तब तक होता है जब तक जन्मपत्र बनके ग्रहों का फल न सुने। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उस के माता,

- शेष पृष्ठ 6 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुकुल पौंधा देहरादून में सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा देहरादून में 3 जून 2015 से 5 जून 2015 तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर (कार्यशाला) का आयोजन किया गया जो सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के 1 से 5 समुल्लास तक स्वाध्याय कराया गया तथा शेष 6 से 14 समुल्लासों का भी स्वाध्याय अगले शिविरों में कराया जायेगा। इस शिविर में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हरिद्वार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड आदि प्रांतों से लगभग 95 शिविरार्थी शामिल हुए तथा शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र भी दिये गये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश नि:शुल्क प्रदान किए गए तथा 300 सत्यार्थ प्रकाश प्रचारार्थ मात्र 10/- में उपलब्ध कराये। शिविर अत्यंत सफल रहा सभी शिविरार्थियों की मांग थी कि इस शिविर को आगे भी इसी प्रकार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जारी रखा जाए। अध्यक्षीय भाषण में डा. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश की भाषा पर टिप्पणी करना ठीक नहीं है। इससे रामपाल जैसे विरोधियों को बोलने का मौका मिलता है।

सत्यार्थ प्रकाश में जहां-जहां अनुभूमिका लिखी है उसको अवश्य पढ़ें। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं डॉ. धनन्जय ने सारी व्यवस्था को स्वयं संभाला हुआ था। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं डॉ. धनन्जय दोनों ने ही कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आगे भी इस प्रकार के शिविरों का आयोजन यदि इसी गुरुकुल में करेगी तो हमें खुशी होगी।

- सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक

स्वाध्याय शिविर में सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कराते डॉ. सोमदेव शास्त्री जी। स्वाध्याय शिविर में भाग लेते दिल्ली से पधारे आर्यजन एवं शिविर समाप्ति पर शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र देते स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री जी एवं प्रमाण प्रत्र ग्रहण करते सभा के मन्त्री एवं शिविर संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य।

ग्रन्थ परिचय

आर्याभिविनय

प्रश्न 1: ईश्वर के स्वरूप के ज्ञान के लिए महर्षि ने मुख्य रूप से कौन-से ग्रन्थ की रचना की ?

उत्तर : महर्षि ने 'आर्याभिविनय' नामक लघु ग्रन्थ द्वारा ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान कराया है।

प्रश्न 2: इस ग्रन्थ में किस माध्यम से ईश्वर के स्वरूप का बोध कराया गया है?

उत्तर: वेदों के मूल मन्त्रों का हिन्दी भाषा में व्याख्यान करके ईश्वर के स्वरूप का बोध कराया है।

प्रश्न 3: क्या इन मन्त्रों द्वारा केवल ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान होता है ?

उत्तर: ईश्वर के स्वरूप के साथ-साथ परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तथा धर्मादि विषयों का भी वर्णन है।

प्रश्न 4: क्या इस ग्रन्थ में सभी वेदों से मन्त्र लिये गये हैं?

उत्तर: नहीं, इसमें केवल दो वेदों - **ऋग्वेद (53 मन्त्र)** और **यजुर्वेद (54 मन्त्र)** से ही मन्त्र लिये गये हैं। इसके अतिरिक्त, एक मन्त्र तैत्तिरीय आरण्यक का भी है।

प्रश्न 5: हमने तो सुना है कि वेद मन्त्रों के अर्थ व्यावहारिक सम्बन्धी और परमेश्वर-संबंधी दोनों प्रकार के होते हैं, परंतु यहाँ व्यवहार सम्बधी उल्लेख नहीं किया गया ।

उत्तर: हाँ, वेद-मन्त्रों के अर्थ व्यावहारिक और आध्यात्मिक (परमेश्वर सम्बंधी), दोनों प्रकार के होते हैं। परंतु यहां महर्षि ने परमेश्वर सम्बन्धी एक प्रकार का ही अर्थ (वह भी संक्षेप में) किया है। अन्यथा ग्रन्थ का आकार बढ़ जाता। ऋषि दयानन्द के शब्दों में ''इस ग्रन्थ से तो केवल मनुष्यों को ईश्वर का स्वरूप ज्ञान और भक्ति, धर्मनिष्ठा, व्यवहार शुद्धि इत्यादि प्रयोजन सिद्ध होंगे, जिससे नास्तिक और पाखण्ड मतादि अधर्म में मनुष्य न फंसे।'' (आर्याभविनय की उपक्रमणिका से उद्धृत)

प्रश्न 6: इस ग्रन्थ में कितने अध्याय हैं और उनका नाम क्या हैं ?

उत्तर: इस ग्रन्थ में दो अध्याय हैं, जिनका नाम 'प्रकाश' दिया गया है। पहले प्रकाश में ऋग्वेद से तथा द्वितीय प्रकाश में यजुर्वेद से मन्त्र लिये गये हैं।

प्रश्न 7: इसमें कुल कितने मन्त्रों का व्याख्यान है ?

उत्तर: कुल 108 मन्त्रों का व्याख्यान है। पहले प्रकाश में 53 और द्वितीय में 55 मन्त्रों की व्याख्या है।

प्रश्न 8: इस ग्रन्थ का लेखन महर्षि ने कब प्रारंभ किया ?

उत्तर : विक्रमी संवत् 1932, मिती, चैत्र शुक्ला 10, गुरुवार के दिन महर्षि ने इस ग्रन्थ का लेखन प्रारंभ किया था।

प्रश्न 9: महर्षि ने केवल दो वेदों से ही मन्त्र क्यों लिये, सभी से क्यों नहीं?

उत्तर : महर्षि के एक पत्र (श्री गोपालराव हरि देशमुख को संवत् 1932, चैत्र बदी 9, शनिवार को लिखे) से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे इस पुस्तक के चार अध्याय और बनाना चाहते थे। सम्भवत: इनमें सभी वेदों से मन्त्र लेते, परन्तु किसी कारणवश यह ग्रन्थ अपूर्ण रहा।

प्रश्न 10 : यह पुस्तक किस भाषा में है?

उत्तर: पुस्तक में मूल मन्त्र तो (वेदों के होने के कारण) संस्कृत भाषा में हैं, परंतु इनके अर्थ एवं व्याख्या हिन्दी भाषा में हैं।

प्रश्न 11: क्या 'आर्याभिविनय' पुस्तक का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद मिलता है?

उत्तर: हाँ, इसके 'गुजराती' और अंग्रेजी' भाषाओं में अनुवाद मिलते हैं।

(**गुजराती अनुवाद**- श्री स्वर्गीय पं. ज्ञानेन्द्र जी ने रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित आर्याभिविनय के आधार पर इसका गुजराती भाषा में अनुवाद किया, जो सन् 1999 में प्रकाशित किया गया था।

अंग्रेजी में अनुवाद - 'आर्याभिविनय' का अंग्रेजी अनुवाद श्री स्वामी भूमानन्द जी सरस्वती ने किया था, जिसे पं. ठाकुरदत्त अमृतधारा धर्मार्थ ट्रस्ट (लाहौर) की ओर से सन् 1942 में छापा गया था।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में 34 वां वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम नई दिल्ली के तत्वावधान में 31 मई 2015 को आर्य समाज रानीबाग में 34 वां वैचारिक क्रान्ति शिविर वैदिक धर्म प्रचार के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री सत्येन्द्र जैन, गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री, दिल्ली सरकार ने अपने सम्बोधन में कहा कि सत्य को जानने के लिए महर्षि दयानंद कृत सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की आवश्यकता है। शिविर में असम, नागालैण्ड, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ, ओडीशा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और दिल्ली के लगभग 325 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

सभा के अन्त में संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर ने बड़े विनीत भाव से माता प्रेमलता शास्त्री को याद किया तथा संस्था के प्रधान महाशय धर्मपाल जी के स्वास्थ्य की कामना की। उद्घाटन समारोह में सर्व श्री गोविन्दराम एम डी एच परिवार, देवराज अरोड़ा,निगम पार्षद, सुदेश भसीन पूर्व निगम पार्षद, रमेश चंद्र अग्रवाल चेयरमैन पैकर्स एवं मूवर्स, धर्मपाल गुप्ता वरिष्ठ उप प्रधान, गौरी शंकर भारद्वाज, पूर्व विधायक, डॉ. रमा शंकर शिरोमणि नागालैण्ड, श्रीमती अंजली कोहली प्रधानाचार्या एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग एवं श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

- संयोजक

महर्षि दयानन्द के परमभक्त एवं प्रसिद्ध आर्यसमाजी युवा क्रान्तिकारी

मैं विश्वासघाती नहीं – पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल'

स्वतन्त्रता के ये दीवाने अलग ही मिट्टी के बने थे। मातृभूमि की बलिवेदी पर शीश चढ़ाने की जैसे इन्हें शीघ्रता थी। पं. रामप्रसाद को भागने के अनेक अवसर मिले परन्तु ऐसा करने से अन्य व्यक्ति पर संकट उपस्थित हो जायेगा यह सोचकर प्रत्येक बार भागने का विचार स्थगित कर दिया। प्रस्तुत है उसकी आत्मकथा से कुछ संस्मरण। -सम्पादक

गिरफ्तारी से पहले ही मुझे अपनी गिरफ्तारी का पूरा पता चल गया था। गिरफ्तारी के पूर्व भी यदि इच्छा करता तो पुलिस वालों को मेरी हवा न मिलती, किन्तु मुझे तो अपनी शक्ति की परीक्षा करनी थी। गिरफ्तारी के बाद सड़क पर आधा घण्टे तक बिना किसी बंधन के खुला हुआ बैठा था। केवल एक सिपाही निगरानी के लिए पास बैठा हुआ था, जो रात भर का जागा था। सब पुलिस अफसर भी रात भर के जगे हुए थे, क्योंकि गिरफ्तारियों में लगे रहे थे। सब आराम करने चले गए थे। निगरानी वाला सिपाही भी घोर निद्रा में सो गया! दफ्तर में केवल एक मुन्शी जी लिखा-पढ़ी कर रहे थे। यह श्री श्रीयुत् रोशनसिंह अभियुक्त के फूफीजात भाई थे। यदि मैं चाहता तो धीरे से उठकर चल देता। पर मैंने विचारा कि मुन्शी जी महाशय बुरे फंसेंगे। मैंने मुंशी जी को बुलाकर कहा- कि यदि भावी आपत्ति के लिए तैयारी हो तो मैं जाऊँ। वे मुझे पहले से जानते थे। पैरों पड़ गए बोले गिरफ्तार हो जाऊँगा, बाल बच्चे भूखे मर जायेंगे। मुझे दया आ गई। एक घण्टे बाद श्री अशफाक उल्ला खाँ के मकान की कारतूसी बन्दूक और कारतूसों से भरी हुई पेटी लाकर उन्हीं मुंशी जी के पास रख दी गई और मैं पास ही कुर्सी पर खुला हुआ बैठा था। केवल एक सिपाही खाली हाथ पास में खड़ा था। इच्छा हुई कि बन्दूक उठाकर कारतूसों की पेटी को गले में डाल लूँ, फिर कौन सामने आता है! पर फिर सोचा कि मुंशी जी पर आपत्ति आएगी, विश्वासघात करना ठीक नहीं। उस समय खुफिया पुलिस के डिप्टी-सुपरिटेण्डेंट सामने छत पर आये। उन्होंने देखा कि मेरे एक ओर कारतूस तथा बन्दूक पड़ी है, दूसरी ओर श्रीयुत् प्रेमकृष्ण का माऊजर पिस्तौल तथा कारतूस रखे हैं, क्योंकि ये सब चीजें मुंशी जी के पास आकर जमा होती थीं और मैं बिना किसी बंधन के बीच में खुला हुआ बैठा हूँ। डिप्टी- सुपरिटेण्डेंट को तुरंत सन्देह हुआ, उन्होंने बन्दूक तथा पिस्तौल को वहाँ से हटवाकर मालखाने में बन्द करवाया। निश्चय किया कि अब भाग चलूँ।

पाखाने के बहाने से बाहर निकल गया। एक सिपाही कोतवाली से बाहर दूसरे स्थान में शौच के निमित्त लिवा लाया। दूसरे सिपाहियों ने उससे बहुत कहा कि रस्सी डाल लो। उसने कहा मुझे विश्वास है यह भागेंगे नहीं। पाखाना नितान्त निर्जन स्थान में था। मुझे पाखाना भेजकर वह सिपाही खड़ा होकर सामने कुश्ती देखने में मस्त हो गया। हाथ बढ़ाते ही दीवार के ऊपर और एक क्षण में बाहर हो जाता, फिर मुझे कौन पकड़ पाता? किन्तु तुरन्त विचार आया कि जिस सिपाही ने विश्वास करके तुम्हें इतनी स्वतन्त्रता दी, उसके साथ विश्वासघात करके भागकर उसको जेल में डालोगे? क्या यह अच्छा होगा? उसके बाल-बच्चे क्या कहेंगे? इस भाव ने हृदय पर एक ठोकर लगाई। एक ठंडी सांस भरी, दीवार से उतरकर बाहर आया, सिपाही महोदय को साथ लेकर कोतवाली की हवालात में आकर बन्द हो गया। लखनऊ जेल में काकोरी के अभियुक्तों को बड़ी भारी आजादी थी। राय साहब पं. चम्पालाल जेलर की कृपा से हम कभी न समझ सके कि जेल में हैं या किसी रिश्तेदार के यहाँ मेहमानी कर रहे हैं। जैसे माता-पिता से छोटे-छोटे लड़के बात-बात पर ऐंठ जाते। पं. चम्पालाल जी का ऐसा हृदय था कि वे हम लोगों से अपनी संतान से भी अधिक प्रेम करते थे। हममें से किसी को जरा सा भी कष्ट होता था, तो उन्हें बड़ा दुख होता था। हमारे तनिक से कष्ट को भी वह स्वयं न देख सकते थे। और हम लोग ही क्यों, उनकी जेल में किसी कैदी या सिपाही, जमादार या मुन्शी-किसी को भी कोई कष्ट नहीं था। सब बड़े प्रसन्न रहते थे। इसके अतिरिक्त मेरी दिनचर्या तथा नियमों का पालन लेखकर पहरे के सिपाही अपने गुरु से भी अधिक मेरा सम्मान करते थे। मैं यथानियम जाड़े, गर्मी तथा बरसात में प्रात:काल तीन बजे से उठकर संध्यादि से निवृत हो नित्य हवन भी करता था।

यदि किसी के बाल-बच्चे को कष्ट होता था तो वह हवन की भभूत ले जाता था! कोई जंत्र माँगता था। उनके विश्वास के कारण उन्हें आराम भी होता था तथा उनकी श्रद्धा और भी बढ़ जाती थी। परिणामस्वरूप जेल से निकल जाने का पूरा प्रबन्ध कर लिया। जिस समय चाहता चुपचाप निकल जाता।

एक रात्रि को तैयार होकर उठ खड़ा हुआ। बैरक के नम्बरदार तो मेरे सहारे पहरा देते थे। जब जी में आता सोते, जब इच्छा होती, बैठ जाते, क्योंकि वे जानते थे कि यदि सिपाही या जमादार सुपरिण्टेंडेंट जेलर के सामने पेश करना चाहेंगे, तो मैं बचा लूँगा। सिपाही तो कोई चिंता ही न करते थे। चारों ओर शान्ति थी। केवल इतना प्रयत्न करना था कि लोहे की सलाखें काट ली थीं। काटकर वे ऐसे ढंग से जमा दी थीं कि सलाखें धोई गई, रंगत लगवाई गई, तीसरे दिन झाड़ी जातीं और जेल के अधिकारी नित्य प्रति सायंकाल घूमकर सब ओर दृष्टि डाल जाते थे, पर किसी को कोई पता न चला! जैसे ही मैं जेल से भागने का विचार करके उठा था, ध्यान आया कि जिन पं. चम्पालाल की कृपा से सब प्रकार के आनन्द भोगने की स्वतंत्रता जेल में प्राप्त हुई, उनके बुढ़ापे में जबकि थोड़ा-सा समय ही उनकी पेंशन के लिए बाकी है, क्या उन्हीं के साथ विश्वासघात करके निकल भागूँ? सोचा जीवन भर किसी के साथ विश्वासघात न किया। अब भी विश्वासघात न करूँगा। मैं विश्वासघाती नहीं बनूँगा उस समय मुझे यह भली भाँति मालूम हो चुका था कि मुझे फाँसी की सजा होगी, पर उपरोक्त बात सोचकर भागना स्थगित ही कर दिया। ये सब बातें चाहे प्रलाप ही क्यों न मालूम हों, किन्तु सब अक्षरश: सत्य हैं, सबके प्रमाण विद्यमान हैं।

पंडित राम प्रसाद 'बिस्मिल'
(आत्म कथा से साभार)

कैसे हुए लाखों लोग ऋषिराज के वश में?

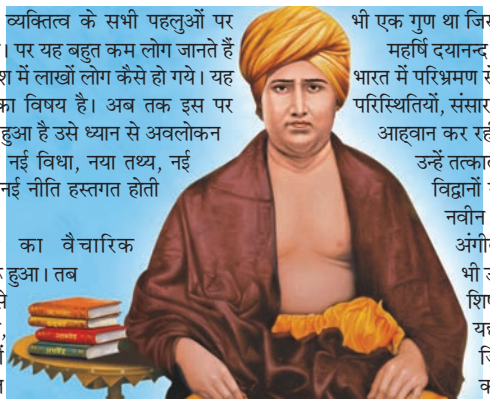

महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं पर श्रद्धालुओं का परिचय है। पर यह बहुत कम लोग जानते हैं कि महर्षि दयानन्द के वश में लाखों लोग कैसे हो गये। यह एक गंभीर अनुसंधान का विषय है। अब तक इस पर विद्वानों का जितना शोध हुआ है उसे ध्यान से अवलोकन करने पर बिल्कुल एक नई विधा, नया तथ्य, नई युक्ति, नया उपाय और नई नीति हस्तगत होती हैं।

महर्षि दयानन्द का वैचारिक उथल-पुथल जब से शुरू हुआ। तब से वे तत्त्व की जिज्ञासा से व्याकुल थे। कहीं चैन नहीं, कहीं संतुष्टि नहीं, कहीं लगाव नहीं कहीं शांति नहीं। केवल ध्येय था परम तत्व की जिज्ञासा और अमरता की प्राप्ति। आगे चलकर जीवन लक्ष्य के साथ एक नया कार्य जुड़ गया। लेकिन यह कार्य तभी छेड़ा जब परमत्व की जिज्ञासा शांत हुई। जब अमरता की प्राप्ति या मृत्यञ्जयता की प्राप्ति या मुत्यु का रहस्य जब विज्ञात हुआ। वह कार्य था परोपकार का, लोकोपकार का, विश्व कल्याण का, संसार की भ्रांति निवारण और सबको तत्त्व ज्ञान देने की धुन।

महर्षि दयानन्द का योग व्यायाम ब्रह्मचर्य साधित शरीर, उच्च शरीर को देखकर सुन्दर और तेजस्वी व्यक्तित्व प्रभाव तो जनता में पड़ता ही था। विद्वत्ता की चमक अलग थी। शस्त्रार्थ हेतु आह्वान का पराक्रम भी था। वक्तृत्व की प्रखरता तो यों कि सरस्वती जिह्वा पर नाचती थी। किन्तु इन सबसे अधिक और भी एक गुण था जिससे लाखों लोग प्रभावित हुए।

महर्षि दयानन्द के चातुर्य का मूल था देशाटन। संपूर्ण भारत में परिभ्रमण से उनको प्रत्यक्ष अनुभव था सांसारिक परिस्थितियों, संसार में फैली हुई भ्रांति उन्हें क्रांति के लिए आह्वान कर रही थी। संसार में फैला हुआ भ्रम जाल उन्हें तत्काल कुछ करने को विवश कर रहा था। विद्वानों से मित्रता हो नहीं सकती थी क्योंकि नवीन तथ्यों को रूढ़िग्रस्त लोग बहुत जल्दी अंगीकार नहीं करते। अत: गिने चुने पंडित भी उनके मित्र नहीं बन पाये, बाद में उनके शिष्यों ने ही उनके कार्यों को अग्रसर किया। यद्यपि उनके शिष्य धनी गुणी, त्यागी, जिज्ञासु सब प्रकार के थे तथापि बृहत् कार्य की शुरुआत स्वामी श्रद्धानन्द ने की। महर्षि दयानन्द को श्रद्धा क्षेत्र में फैले छल-कपट, पाखण्ड वञ्चना अन्याय ने भी महर्षि को चातुर्य के साथ धैर्य धारण करने को विवश किया था। जितना बड़ा शत्रु उतना बड़ा युद्ध। इसके लिए उन्होंने अपने स्वाध्याय, अनुसंधान, योगानुष्ठान, तत्वज्ञान आदि के सहारे, संग्राम आरंभ किया और दिग्विजयी हुए।

महर्षि दयानन्द के वक्तृत्व का प्रभाव जन-मानस पर गहरा तो होता था किन्तु प्रतिकूलताएं उसे उखाड़ने में भी लगी रहती थी जिससे दृढ़ता कम हो जाती थी। अनेकों मेलों में उन्होंने विज्ञापन कर-करके अपने विचार रखे और भयंकर बवण्डर खड़े होते रहे। जिससे जूझने का प्रचण्ड धैर्य स्वामी जी के हृदय में आस्तिकता का बल उन्हें सदा आगे बढ़ाता रहा। महर्षि दयानन्द राजसभाओं में

- शेष पृष्ठ 8 पर

महर्षि दयानन्द के चातुर्य का मूल था देशाटन। संपूर्ण भारत में परिभ्रमण से उनको प्रत्यक्ष अनुभव था सांसारिक परिस्थितियों, संसार में फैली हुई भ्रांति उन्हें क्रांति के लिए आह्वान कर रही थी। संसार में फैला हुआ भ्रम जाल उन्हें तत्काल कुछ करने को विवश कर रहा था विद्वानों से मित्रता हो नहीं सकती थी क्योंकि नवीन तथ्यों को रूढ़िग्रस्त लोग बहुत जल्दी अंगीकार नहीं करते। अत: गिने चुने पंडित भी उनके मित्र नहीं बन पाये, बाद में उनके शिष्यों ने ही उनके कार्यों को अग्रसर किया। -सम्पादक

पृष्ठ 3 का शेष

पिता पुरोहित से कहते हैं-'महाराज! आप बहुत अच्छा जन्मपत्र बनाइये।' जो धनाढ्य हों तो बहुत सी लाल पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्मपत्र बनाके सुनाने को आता है। तब उस नवजात शिशु के मां-बाप ज्योतिषी जी के सामने बैठ के कहते हैं-'इस का जन्मपत्र अच्छा तो है?' ज्योतिषी कहता है-'जो है सो सुना देता हूं। इसके जन्मग्रह बहुत अच्छे और मित्रग्रह भी बहुत अच्छे हैं जिन का फल धनाढ्य और प्रतिष्ठावान, जिस सभा में बैठेगा तो सब के ऊपर इस का तेज पड़ेगा। शरीर से आरोग्य और राज्यमानी होगा।' इत्यादि बातें सुनके पिता आदि बोलते हैं-'वाह वाह ज्योतिषी जी! आप बहुत अच्छे हो।' ज्योतिषी जी समझते हैं इन बातों से कार्य सिद्ध नहीं होता। तब ज्योतिषी बोलता है-'ये ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं अर्थात् फलाने-फलाने ग्रह के योग से 8 वर्ष में इस का मृत्युयोग है।' इस को सुन के माता पितादि पुत्र के जन्म के आनन्द को छोड़ के शोकसागर में डूब कर ज्योतिषी से कहते हैं कि 'महाराज जी! अब हम क्या करें?' तब ज्योतिषी जी कहते हैं-'उपाय करो'। गृहस्थ पूछता है कि 'क्या उपाय करें।' ज्योतिषी जी प्रस्ताव करने लगते हैं कि 'ऐसा कि ऐसा-ऐसा दान करो। ग्रह के मन्त्र का जप कराओ और नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराओगे तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न हट जायेंगे।' अनुमान शब्द इसलिये है कि जो मर जायेगा तो कहेंगे हम क्या करें, परमेश्वर के ऊपर कोई नहीं है। हम ने तो बहुत सा यत्न किया और तुम ने कराया, उस के कर्म ही ऐसे थे। और जो बच जाये तो कहते हैं कि देखो-हमारे मन्त्र, देवता और ब्राह्मणों की कैसी शक्ति है? तुम्हारे लड़के को बचा दिया।

यहां यह बात होनी चाहिये कि जो इनके जप पाठ से कुछ न हो तो दूने तिगुने रूपये उन धूर्तों से ले लेने चाहिये और बच जाय तो भी ले लेने चाहिये क्योंकि जैसे ज्योतिषियों ने कहा कि 'इस के कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं।' वैसे गृहस्थ भी कहें कि 'यह अपने कर्म और परमेश्वर के नियम से बचा है, तुम्हारे करने से नहीं' और तीसरे गुरु आदि भी पुण्य दान करा के आप ही वह सब सामग्री ले लेते हैं तो उनको भी वही उत्तर देना, जो ज्योतिषियों को दिया था। महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त विचारों से फलित ज्योतिष का निस्सार व अविद्यायुक्त-ज्ञानहीन होना सिद्ध होता है।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में एक जाट और ज्योतिषी की कथा देकर बताया है कि जाट से दान पुण्य लेने के चक्कर में गांव के एक जाट ने उसे पीट डाला और कहा कि तुम्हें अपने वर्तमान का तो पता नहीं, हमें भविष्य बताने आये थे। एक अन्य कथा में जाट के पिता की मृत्यु पर एक पौराणिक पण्डित जी ने उसकी दूध देने वाली गाय दान में ले ली। सम्बन्धियों के दबाव व अनुभवी पण्डित जी के हथकण्डों के कारण मजबूरी में उस जाट को अपनी गाय देनी पड़ी जिससे उसके बच्चे दूध पीने से वंचित हो गये। पिता की तेरहवीं होने और मेहमानों के विदा होने के बाद जाट ने पण्डितजी से पिता का वैकुण्ठ में सकुशल होने का प्रमाण मांगा। जब कोई प्रमाण पण्डित जी नहीं दे सके तो वह जाट अपनी गाय खोलकर अपने घर ले गया और पण्डित जी से बोला कि जब पिताजी की कुशलता का प्रमाण मिले तो वह प्रमाण देकर गाय ले जाना। जिस समाज में ऐसे विवेकी बन्धु होते हैं वहां अज्ञानी, स्वार्थी व मिथ्या व अन्धविश्वासी लोगों की दाल नहीं गलती। जिन दिनों महर्षि दयानन्द जी ने फलित ज्योतिष का युक्ति व प्रमाणों से खण्डन किया था उन दिनों हमारा समाज व देश आज की तुलना में कहीं अधिक अज्ञान, अन्धविश्वासों व कुरीतियों से ग्रसित था। उनके प्रचार का परिणाम ही आज इन असत्य व अनुचित अन्धविश्वासों में कमी का होना है। हमारा समाज कितना अज्ञानी व अन्धविश्वासी है इसका ज्ञान आज भी मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद व जन्मना जातिप्रथा आदि का जारी रहना है। अत: आज पुन: पुरजोर इन मिथ्या विश्वासों के खण्डन की आवश्यकता है जिससे समाज इन बुराईयों से मुक्त हो सके। स्वामी दयानन्द जी का आरम्भ किया यह कार्य अधूरा है। आशा है कि उनके अनुयायी आर्यसमाजी बन्धु व समाज के विवेकी लोग समाज को अन्धविश्वासों व कुरीतियों से मुक्त कराने का प्रयास करेंगे।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर''
सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो।

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे :-

आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

220.रविन्द्र सैनी	1100/-
221.जगवीर सोलंकी	500/-
222. जयदेव सोलंकी	1100/-
223. हरिचंद सोलंकी	200/-
224. रामफल सोलंकी	100/-
225. दयानन्द सोलंकी	500/-
226. रणसिंह सोलंकी	100/-
227. श्री प्रकाश सोलंकी	500/-
228. कुलबीर सोलंकी	1100/-
229. रमेश सोलंकी	500/-
230. जुगन काकरान	100/-
231. महेन्द्र सोलंकी	1100/-
232. राजीव सोलंकी	350/-
233. जसमेर दलाल	1000/-
234. दयानन्द मस्तू	100/-
235. धर्मपाल सैनी	500/-
236. अत्तर सिंह फलस्वाल	1100/-
237. विजेन्द्र सोलंकी	500/-
238. जितेन्द्र भट्टू	500/-
239. चरण सिंह पहलवान	1100/-
240. जयपाल सोलंकी	100/-
241. प्रकाश सोलंकी	500/-
242. धनबीर सोलंकी	100/-
243. रमेश सोलंकी	250/-
244. प्रेम सिंह सोलंकी	200/-
245. योगेश शर्मा	200/-
246. संदीप प्रजापत	100/-
247. सुखवीर सोलंकी	1100/-
248. रणवीर सोलंकी	101/-
249. आनन्द बैण्ड	100/-
250. जयनरायण सोलंकी	100/-
251.लक्ष्मी लाम्बा	1200/-
252.डा. सुशील गुप्ता	200/-
253. विनोद सोलंकी बोबी	1100/-
254. प्रवीन लाम्बा	500/-
255. आनन्द सोलंकी	100/-
256. मा. सुनील यादव	500/-
257. मा. तेजपाल मीणा	500/-
258. मा. धीरज यादव	300/-
259. मा. रामानन्द चौहान	200/-
260. मा. राजेश्वर सोनी	100/-
261. मा. रोहिवाश्व:	200/-
262. मा. सतेन्द्र पाण्डे	200/-
263. मा. अशोक कालरा	300/-
264. मा. आनन्द यादव	200/-
265. मा. जयचंद यादव	100/-
266. प्रिंसिपल रेखराम भीणा	100/-
267. मा. करतार सिंह	100/-
268. मा. भूपेश भार्गव	100/-
269. मा. बजरंग लाल	100/-
270. मनीष सोलंकी	100/-
271. संतोष विद्याकर	500/-
172. रतन सिंह गौड	551/-
273. ज्ञानेन्द्र काकरान	100/-
274. दीपक तंवर	100/-
275. ललित गौड	100/-
276. हीरा लाल	50/-
277. रामफल दहिया	500/-
278. जोगेंद्र सोलंकी	501/-
279. मा. दीपचंद सैनी	500/-
280. सैनी स्टूडियों	500/-
281. विमला सोलंकी	500/-
282. सुनीता सहरावत	501/-
283. सुमेर सोलंकी	500/-
284. जोगेंद्र लाम्बा	100/-
285. डा. राजेश लांबा	1100/-
286. राजीव लाम्बा	500/-
287. धर्मवीर	500/-
289. फूलवती सैनी	200/-
290. शोभित पांचाल	1100/-
291. उषा पांचाल	100/-
292. पुष्पा	100/-
293. अभिषेक पांचाल	500/-
274. सतीश पांचाल	500/-
275. जयदेव सोलंकी	500/-
276. नवीन गौड	1100/-
277. वेदपाल सतपाल	1100/-
278. दिनेश सोलंकी(कोषा.)	1100/-
279. वेद सैनी	150/-
280. नवीन लाम्बा	500/-
281. भीम सिंह प्रजापत	500/-
282. समेसिंह खोखर	101/-
283. सन्तरा देवी	500/-
284. सुनीता	100/-
285. ओमवीर सोलंकी	1100/-
286. अजीत सोलंकी	1100/-
287. कुलदीप सोलंकी	1100/-
288. सूरत सिंह सैनी	500/-
289. जिले सिंह सोलंकी	500/-
290. बदामों देवी	200/-
291. महेंद्र लांबा	200/-
292. माया सैनी	200/-
293. सचिन कुमार	200/-
294. रामनाथ लांबा	251/-
295. सूबे सिंह सोलंकी	500 /-
296. कृष्ण लाम्बा	500/-
297. चदंरी देवी	101/-
298. राम सिंह लाम्बा	500/-
299. बलराम लाम्बा	500/-
300. रामचन्द्र लाम्बा	251/-
301. सुनील कुमार	500/-
302. ज्योत्स्ना पाचांल	250/-
303. किरण देवी पांचाल	250/-
304. दया राजपूत	1100/-
305. सुशील पांचाल	1100/-

- क्रमश: इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे।

आप भी अपनी दानराशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम भेज सकते हैं अथवा सभा के निम्नलिखित बैंक खाते में सीधे जमा करा सकते हैं।

खाता सं. 910010008984897
IFSC - UTIB0000223 Axis Bank
MICR - 110211025

- महामन्त्री

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद (उ.प्र.) द्वारा

आर्यवीर चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

21 से 28 जून 2015 : एस. एस. इण्टर कॉलेज, स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद

उद्घाटन : 21 जून प्रात: 10 बजे **समापन :** 28 जून सायं 4 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्यवीरों को अपना आशीवार्द देने हेतु अवश्य पहुंचें।

निवेदक

ज्ञानेन्द्र आर्य (गांधी) संरक्षक | **डॉ. अभय श्रोत्रिय** प्रधान | **जसवन्त सिंह आर्य** मंत्री

गुरुकुल पौंधा में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

श्री मदद्यानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, देहरादून का 5 से 7 जून 2015 तक का तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव व सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वेदों के मर्मज्ञ डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई थे। यज्ञ की पूर्णाहूति के अनन्तर युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य ने भजन प्रस्तुत किये जिसे श्रोताओं ने बहुत पसंद किया। आर्य जगत के विद्वान डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने सम्बोधित कर कहा कि स्वामी दयानन्द के विचारों का हमारे देश पर ही नहीं वरन् समूचे विश्व पर प्रभाव पड़ा। महर्षि दयानन्द ने वेदों का उद्धार और वेदाध्ययन का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द ने उद्घोष किया कि हमारा प्राचीन गौरव पूर्ण नाम आर्य है, हमारा देश आर्यावर्त है और वेद सारी मानव जाति का धर्म ग्रन्थ है। अन्त में डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह महाकुम्भ ज्ञान का महाकुम्भ है जहां लोगों ने आकर ज्ञान गंगा में स्नान किया है। इसके पश्चात गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भांति-भांति के व्यायाम एवं नाना प्रकार के शारीरिक करतब दिखायें, जिसे देखकर श्रोता भाव विभोर हो गये। सभी ने संस्थापक स्वामी प्रणावानन्द सरस्वती, प्राचार्य डॉ. आचार्य धनन्जय आर्य तथा गुरुकुल के आचार्य, अधिष्ठाता व ब्रह्मचारियों के कार्यों की मुक्त कंठ के प्रशंसा की और हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

-मनमोहन कुमार आर्य

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

प्रधान :श्री स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
मन्त्री :श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
कोषाध्यक्ष :श्री प्रेम सभ्भरवाल

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी, सै.-2, कोटा (राज.)

प्रधान : श्री श्रीचन्द गुप्ता
मन्त्री : श्री रघुराज सिंह कर्णावत
कोषाध्यक्ष : श्री शिवदयाल गुप्ता

आवश्यकता है

गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली में कक्षा 6 से लेकर शास्त्री तक के विद्यार्थियों को अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी व गणित पढ़ाने हेतु अध्यापक एवं बच्चों की देखरेख करने हेतु संरक्षक की आवश्यकता है।

- प्राचार्य, आचार्य सुधांशु
9350538952, 8800443826

प्रवेश सूचना

गोविन्द शान्ति सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित बटुक विकास केन्द्र (गुरुकुल) आलियाबाद, मंडल शामीरपेट, जिला रंगारेड्डी (आ.प्र.) में नवीन सत्र 2015-16 के लिए 21 जून से प्रथम से आठवीं कक्षा के प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 5 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। दिनचर्या गुरुकुलीय होगी। सम्पर्क करें -

- आचार्य भवभूति,
मो. 09312569169, 09392476077

प्रवेश सूचना

आर्यसमाज आर्य नगर पहाड़गज नई दिल्ली में संचालित आर्ष गुरुकुल नवीन सत्र 2015-16 के लिए 20 जून से प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की योग्यता 5वीं पास होनी चाहिए। गुरुकुल में शिक्षा एवं आवास की व्यवस्था है। गुरुकुल में संस्कृत, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी, कम्प्यूटर इत्यादि विषय भी पढ़ाए जाते हैं। सम्पर्क करें -

आचार्य संजय
मो. 09540267412, 011-23514517

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/- किलो (10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 5 किलो, 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

अब आर्यसमाज की सूचनाएं पाएं व्हाट्स एप्प पर

आर्य समाज से जुड़ने व सोशल मीडिया द्वारा आर्य समाज सम्बन्धी सूचना 'व्हाट्स एप' पर प्राप्त करने के लिए इस नम्बर 09540045898 को अपने फोन में सेव करके इस नम्बर पर अपना नाम एवं राज्य लिखकर भेजें, ध्यान रहे जब तक आपके फोन में ये नम्बर सेव रहेगा तभी तक सूचना आप तक पहुँच पाएगी। - ***महामन्त्री***

आचार्य वेदभूषण - एक निष्काम कर्मयोगी

हैदराबाद के प्रख्यात, मूर्धन्य वैदिक विद्वान, आचार्य वेदभूषण जी का बुधवार दिनाँक 13 मई 2015 की सायं, उनके सुलतान बाजार स्थित निवास, ज्ञान गंगा, वेद मंदिर में निधन हो गया जिससे संपूर्ण आर्यजगत् शोक संतप्त है।

आचार्य वेदभूषण जी का जन्म सन 1930 में युगादि के दिन, प्रसिद्ध हैदराबाद संग्रामरत वैदिक परिवार में हुआ। हैदराबाद संग्राम के अध्वर्यु, भाई वंशीलाल जी के आप ज्येष्ठ पुत्र थे। वैदिक संस्कार एवं क्रांतिकारी विचार उन्हें जन्मघूंटी में मिले थे, जिनसे उन्होंने जीवन भर समझौता नहीं किया। आचार्य जी की शिक्षा श्यामार्य गुरुकुल बार्शीध्येडशी एवं गुरुकुल झज्जर में हुयी। उनका वेद एवं वैदिक विचारधारा का ज्ञान और भाष्य क्षमता अतुलनीय थी। वेद, उपनिषद्, दर्शन, सत्यार्थप्रकाश आदि के वे गहन अध्येता थे। आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धांतों के अत्यन्त निष्ठावान प्रचारक-प्रसारक रहे। आचार्य जी ने देश भर में जगह जगह पुरोहित प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से, सैकड़ों आर्य पुरोहितों का निर्माण किया। वेद व यज्ञ के प्रचारार्थ, हैदराबाद, दिल्ली, सिलीगुड़ी, नेपाल, यमुनानगर, रीवाँ, देहरादून, पानीपत आदि शहरों में आयोजित सफल कार्यक्रमों ने उन्हें अखिल भारतीय ख्याति प्रदान की। हैदराबाद में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, एक सौ एक कुण्डीय वर्षेष्टि यज्ञ जैसे अनेक विराट् आयोजन तथा दिल्ली के रामलीला मैदान में प्रधानमंत्री के उपस्थिति में 101 कुण्डीय महायज्ञ, पानीपत सहित अनेक नगरों में सफल वृष्टि यज्ञ, आपके श्रेष्ठ प्रबंधन के परिचायक हैं। वेद तथा आर्य समाज के प्रचारार्थ, आपने विदेशों यथा, नैरोबी, मॉरीशस की यात्रायें भी की।

आर्ष साहित्य के लेखन-प्रकाशन का कार्य अनवरत रूप से जीवन भर चलता रहा। उनकी पुस्तकें वैदिक सांध्य गीत, यज्ञ सुरभि, जीवन सार, सांध्य सौरभ, शान्ति बोध आर्यजगत् में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। संध्या, दैनिक व बृहद्यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण आदि मंत्रों के सुमधुर पद्यानुवाद की परंपरा का आपने शुभारम्भ किया। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने मासिक ज्ञानगंगा, साप्ताहिक-दैनिक क्रांतिदूत, मासिक आंध्रवीणा, विशेष अवसरों पर प्रकाशित स्मारिका आदि अनेक ग्रंथों का सफल संपादन किया।

नगर आर्य समाज, अंतर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान एवं वेद मंदिर जैसी संस्थाओं के संस्थापक एवं संचालक रहे। गोरक्षा आंदोलन व पंजाब में हिंदी रक्षा आंदोलन जैसे अनेक आन्दोलनों में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। किशोरावस्था में ही हैदराबाद मुक्ति संग्राम के दौरान उन्होंने अपने हाथ की दो अंगुलियां गंवाँ दी थीं। हिंदी रक्षा आंदोलन ने उनकी आँखों पर विपरीत प्रभाव डाला था, इन सबके बावजूद भी, आचार्य जी वैदिक मार्ग पर अनवरत आगे बढ़ते चले।

वे अपने पीछे वैदिक विचारकों एवं पुरोहितों का एक ऐसा समुदाय प्रशिक्षित कर छोड़ गए हैं, जो देश विदेश में महर्षि दयानंद प्रणीत संस्कारों की ज्योति जगाये हुए है। विद्या-वंशी परिवार एवं समस्त आर्य जगत उन्हें भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने आप को उनके कार्य और विचारों के प्रति पुन: समर्पित करते हैं।

ऊपरलिखित परिचय स्वर्गीय आचार्य जी के परिवार द्वारा प्रेषित एक लेख से लिया गया है।

मेरे स्वयं के लिए यह एक अपूरणीय क्षति है। समय समय पर आचार्य जी का सान्निध्य मुझे प्राप्त होता रहा और उनकी विद्वत्ता,सौम्यता, मधुरता, यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा एवं विश्वास ने मेरे और मेरे परिवार की यज्ञ के प्रति श्रद्धा और निष्ठा को और भी सुदृढ़ किया। जब पानीपत में उन्होंने सन 1987 में ऐतिहासिक वृष्टि यज्ञ करवाया, तो मुझे एक वेदपाठी के रूप में उनका सान्निध्य मिला। वृष्टि के होने के बारे में उनका विश्वास, यज्ञ के अन्तिम समय तक सुदृढ़ रहा और यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् 7 दिनों तक पानीपत और इसके आसपास के इलाकों में मूसलाधार वर्षा हुयी। यह घटना उनकी यज्ञ में आस्था और यज्ञ विज्ञान में उनकी निपुणता का जीता जागता प्रमाण है ।

परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें और हम सभी को उनके गुणों को ग्रहण करने और उन पर चलने का सामर्थ्य प्रदान करें। ओम शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

- विश्रुत आर्य, उ. प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे पं. वेद भूषण जी की दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

8 साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 जून से रविवार 21 जून, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18/19 जून, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 जून, 2015

पृष्ठ 5 का शेष

प्रवेश करते थे जिससे यहां के शासनतंत्र की दुर्बलता का बोध हुआ और वे राजाओं के सन्मार्ग दिखाकर राष्ट्रीय भावना, कर्तव्य भावना से आबद्ध किया। अनेक राजा नित्य यज्ञ और सन्ध्या आदि का अनुमान महर्षि के प्रबोधन से आजीवन निभाते रहे। यद्यपि इसका कोई विशेष लेख या चर्चा प्राप्त नहीं होती किन्तु आचार्य प्रवृत्ति से इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द ने अनेक शास्त्रों का विलोकन किया था। इससे भी उनके चातुर्य की अपार वृद्धि हुई वे कूपमण्डूकता जैसी स्थिति से सर्वथा दूर रहकर महासागर मीनता की स्थिति को आदृत करते रहे। ऋषितयी से ज्ञात होता है कि वे कितने विलक्षण थे शास्त्राध्ययन और अध्यापन में इन सब चातुर्य मूलों से वे स्वमन्तव्य को विवेचित कर तात्विक निष्कर्ष तक पहुंचे थे। अपने उपलब्ध परिपुष्ट अनुभवों से जनता को जोड़ने का जो उपाय महर्षि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त हुए, वे थे प्रवचन, भाषण, शास्त्रार्थ, ग्रंथलेखन आदि किन्तु इन सबसे ज्यादा कारगर उपाय वह था जिससे उन्होंने लाखों लोगों को वश में किया और प्रभावित करके आर्य समाज जैसा निर्विकार संगठन बनाया। वह उपाय था सतत पत्र लेखन एवं विज्ञापन। देश विभाजन से पूर्व महर्षि दयानन्द के चार पांच सौ पत्र महाशय मामराज ने इकट्ठे किए थे। भारत के अलग होने के बाद आर्य विद्वानों ने उन्हें (जितने प्राप्त हुए) रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया। आज ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन नाम से चार भागों में यह पुस्तक छपी है। इसके अवलोकन से ज्ञात होता है कि वे अपने पत्रों और विज्ञापनों के द्वारा लाखों लोगों को अपने वश में किये थे। पत्रों की भाषा संस्कृत थी किन्तु हिन्दी और अंग्रेजी में भी वे पत्र लिखवाते थे उन पत्रों में संस्कृत शिक्षण के संबन्ध में महर्षि के विचार बड़े प्रबल हैं। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिवन के शासकीय पाठ्यक्रम में सम्मलित करने के लिए भी पत्र लिखा था। महर्षि दयानन्द के ग्रंथों या ग्रंथों को पाठ्यक्रमों से जोड़ने का प्रयास होना चाहिए, संपूर्ण पुस्तक के बजाय जो वर्तमान की मानसिकता के अनुकुल हों ऐसे अंश लाभ और कौतूहल के लिए जोड़े जा सकते हैं।

–आचार्य धनन्जय शास्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

7 योगासन पेशियों को शक्ति प्रदान करते हैं। इससे मोटापा घटता है और दुर्बल कमजोर व्यक्ति तंदुरुस्त बनता है।

8 योगासन स्त्रियों की शरीर रचना के लिये विशेष अनुकूल है। वे उनमें सुन्दरता, सौम्यता, सुघड़ता सौन्दर्य आदि गुण उत्पन्न करते हैं।

9 योगासनों से बुद्धि की वृद्धि होती है और धारण शक्ति को नई स्फूर्ति एवं ताजगी मिलती हैं। स्वयं आत्म जाग्रति होने लगती है।

10 योगासन स्त्रियों और पुरुषों को संयमी एवं आहार–विहार में मध्यम मार्ग का अनुकरण करने वाला बनाते हैं, अत: मन और शरीर को स्थाई तथा सम्पूर्ण, स्वास्थ्य मिलता हैं।

11 योगासन श्वांस–क्रिया का नियमन करते हैं, हृदय और फेंफड़ों को बल देते हैं, रक्त को शुद्ध करते हैं और मन में स्थिरता पैदा कर संकल्प शक्ति को बढ़ाते हैं।

12 योगासन शारिरिक स्वास्थ्य के लिये वरदान स्वरूप है क्योंकि इनमें शरीर के समस्त भागों पर प्रभाव पड़ता है और वह अपने कार्य सुचारु रूप से करते हैं।

– योगदर्शनम् से साभार

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाए नि:शुल्क जानकारी

एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई है। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की कोई **जानकारी–सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें।** आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। – ***महामन्त्री***

प्रतिष्ठा में,

आवश्यकता है

आर्य समाज सान्ताक्रूज (वैस्ट) लिंकिंग रोड, मुम्बई–400054 को सद् गृहस्थ–विद्वान/प्रचारक/पुरोहित की आवश्यकता है। मिशनरी भावना के महानुभावों को प्राथमिकता दी जायेगी। सम्पर्क करें – **महामंत्री**

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह